सत्यनाम
कबीर-पंथी
बालोपदेश

सत्यनाम ।

कबीरपन्थीबालोपदेश

अर्थात् ।

सद्गुरु कबीरसाहबके सात ककहरोमेंसे
३ सम्पूर्ण ककहरोंका संग्रह ।
प्रसिद्ध कबीरपन्थी भारतपथिक महन्त श्रीस्वामी
युगलानन्दविहारीके कबीर दर्शन पुस्तका-
लयसे प्राप्तः

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

संस्करण : जनवरी २००९, सम्वत् २०६५

मूल्य १० रुपये मात्र।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

**Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate.
Pune -411 013.**

सत्यनाम ।

अथ ज्ञानचौतीसा प्रारंभः ।

कक्का—केता कहे कबीर, कहा कोई नहिं माने । काया में करतार, नाहिं कोई पहिंचानै ॥ कर्म बन्ध संसार, काल सों नहिं बचन है । अरे हाँ अवधू, काम क्रोध हंकार कल्पना कठिन है ॥ १ ॥

खख्खा—खारी सो कहै खाँड, खाँड खारी विधि लेखै । खरे खोटको न्याव, नहीं हिरदये विवेखै ॥ खोरिन खोरिन फिरै, खाक मुख लाय के । अरे हाँ अबधू खसम परो न चीन्हि रहे खिसियायके ॥ २ ॥

गग्गा–ग्यान सोई निज सार, जाहि सो थिर भया । कर्म को टूट्यो फन्द, द्वन्द्व सब खिर-गया ॥ ग्यानी कथै अगाध, रहे हिया फेर फारके । अरे हाँ अबधू गाडि रख्यो बातन की, लेगयो चोर उखारिके ॥ ३ ॥

घग्घा–घटमें आतम राम, मिलो साहब सना। घर में प्रेम निधान, चेत मेरे मना ॥ जहाँ नहीं घाम नहिं छाहँ, तहां इन घर करा । अरे हाँ अबधू–घर की सुरत बिसार घसीटन में परा ॥ ४ ॥

ङङा (नन्ना) नयन बिना नर अंध, द्वन्द्व धोखा परा । सूझे वार न पार, प्रान परबस परा॥नित कै संशय शूल मूल बिसराइया । अरे हाँ अबधू–नहीं भयो निरशंक मुक्ति किन पाइया ॥ ५ ॥

चच्चा–चले जात नर नष्ट चौरासी धारमें ।

बिन चीन्हे यहि चले परे भौभारमें ॥ चतुर
बिचच्छन होइ कहो कहैवालगे। अरे हाँ
अबधू–पडे चोर के हाथ चीन्हि नाहीं
भगे ॥ ६ ॥

छछ्छा–छल व्यवहार के धोखा छाडहू । काम
क्रोध अहंकार कि, लोभ निबारहू ॥ क्षमा
शील सन्तोष सत्य हिय मा धरो । अरे हाँ
अबधू-परख बोलता ब्रह्म चीन्ह ताको
करो ॥ ७ ॥

जज्जा–जग जीवन जगदीस जगत गुरु जीवहै।
जाने जान सुजान सोई निज पीव है ॥
खोजो जो नव खण्ड भेद निज कहिदिया ।
अरे हाँ अवधू–जुग जुग अविचल जीव
कबीर गुरु कहिदिया ॥ ८ ॥

झझ्झा–झूठ झगरा झोडु द्वन्द्वमें कहा परो ।
झलक मनी उजियार निकट हियमें धरो ॥

झाड पातको छोड सार निज ताय ले ।
अरे हाँ अबधू—कहा झखे मत हीन परम गुन
गायले ॥ ९ ॥

नन्ना—नाह छोडि नरा नार चली है जार पे ।
पिया की सुरत बिसार तो आशिक थार
पे ॥ नीच बुद्धि मति हीन नहीं स्वास्थ
भयो । अरे हाँ अबधू—जार बसे हिय माँहि
नरक ताते गयो ॥ १० ॥

टट्टा—टीडी भयी जहान उडी असमान कूँ ।
हटा नेह निदान चली घमसान कूँ ॥ टाराही
नहिं टरे भस्म धोखा परा । अरे हाँ अबधू—
कठिन टेक मनमें धरी,तार टूटिया मरा ११

ठट्ठा—है ठोरे के ठोरे दूर धोखा भया । ठोके
सबहिं कपाल गुसैयाँ कित गया ॥ ठठके
बेडा बांधि पार कोई ना तरा । अरे हाँ

अवधू-ठाकुर बिसराय काम ठग सों
परा ॥ १२ ॥

डड्डा-डसे भुवंगम चोर बिरह विष बाढ़िया।
डसे जो चतुर सुजान बिरह में ढारिया ॥
डार पात कूँ छोडि सिपत सबहिन किया।
अरे हाँ अवधू डुंड बाज के हाथ प्रान अपना
दिया ॥ १३ ॥

ढड्ढा-ढोल मारि गुरु कहे सबन सों टेरि के।
ढूँढे सरग पताल थके सब हेरि के ॥
कहँ ढूँढे मतिहीन कहे भटकत फिरे।
अरे हाँ अवधू-ढिगही परमानन्द चीन्हि
नाहीं परे ॥ १४ ॥

णण्णा-निरगुन निरंकार निरञ्जन सब जपे।
नहिं रूप नहिं रेख ताही को सब थपे ॥ जहां
नहीं तहाँ सही सही तहाँ नहिं किया। अरे

झाड पातको छोड सार निज ताय ले ।
अरे हाँ अबधू–कहा झखे मत हीन परम गुन
गायले ॥ ९ ॥

नन्ना–नाह छोडि नरा नार चली है जार पे ।
पिया की सुरत बिसार तो आशिक थार
पे ॥ नीच बुद्धि मति हीन नहीं स्वास्थ
भयो । अरे हाँ अबधू–जार बसे हिय माँहि
नरक ताते गयो ॥ १० ॥

टट्टा–टीडी भयी जहान उडी असमान कूँ ।
हटा नेह निदान चली घमसान कूँ ॥ टाराही
नहिं टरे भस्म धोखा परा । अरे हाँ अबधू–
कठिन टेक मनमें धरी,तार टूटिया मरा ११

ठट्ठा–है ठोरे के ठोरे दूर धोखा भया । ठोके
सबहिं कपाल गुसैयाँ कित गया ॥ ठठके
बेडा बांधि पार कोई ना तरा । अरे हाँ

अबधू–ठाकुर बिसराय काम ठग सों
परा ॥ १२ ॥

डड्डा–डसे भुवंगम चोर बिरह विष बाढिया ।
डसे जो चतुर सुजान विरह में ढारिया ॥
डार पात कूँ छोडि सिपत सबहिन किया ।
अरे हाँ अवधू डुंड बाज के हाथ प्रान अपना
दिया ॥ १३ ॥

ढड्डा–ढोल मारि गुरु कहै सबन सों टेरि के ।
ढूँढे सरग पताल थके सब हेरि के ॥
कहँ ढूँढे मतिहीन कहै भटकत फिरे ।
अरे हाँ अबधू–ढिगही परमानन्द चीन्हि
नाहीं परे ॥ १४ ॥

णण्णा–निरगुन निरंकार निरञ्जन सब जपे ।
नहिं रूप नहिं रेख ताही को सब थपे ॥ जहां
नहीं तहाँ सही सही तहाँ नहिं किया । अरे

हाँ अबधू--नर अज्ञानी असल मिटाय नकल सिर पर लिया ॥ १५ ॥

तत्ता--तत्त्व यही निज सार और कछु नामिले । तुही तुही निज तुही हिरदा में देख ले ॥ तिरखावन्त पुनि साधु--तलफ जाकी धरे । अरे हाँ अबधू--सो बोले घटमाहिं और ले क्या करे ॥ १६ ॥

थथ्था--थकित भये नर नारि सो ढूंढे ना मिले। थिर होय लखे न आप अहंमें सब गले ॥ जहाँ अति अगम अथाह तहाँ थाह ना चले । अरे हाँ अबधू--थित बिन थँभे कौन बहे भौमें भले ॥ १७ ॥

दद्दा--दूसर कोइ नाहिं द्वन्द्व में कहाँ परो । दया धर्म सत सील साधु सेवा करो ॥ दिलकी दुविधा छाडि काम एता किया । अरे हाँ

अबधू--दिव्य दृष्टि से देख दरस दिलमें
दिया ॥ १८ ॥

धध्धा--धन्य धन्य सो भाग जाहि परतीत है । यही ध्यान धनसार ओर विप्रीत है ॥ धावे सकल जहान धोखामें सब परे । अरे हाँ अबधू--चहुँ दिस द्वन्द्व बहाल, सूनकूँ सब चले ॥ १९ ॥

नन्ना--निरख देख निज नैन आपमें आप है । निरभय धजा निशान अगर फहरात है ॥ निसा मान भरपूर परम सुख पाइहो । अरे हाँ अबधू--निसि वासर को सोग सबै विसराइ हो ॥ २० ॥

पप्पा--पप्पा पूरण ब्रह्म है प्रान प्रानते अवर न कोई । काया बीर कबीर प्रेम गुरु निहचे सोई ॥ पत्थर पूजे प्रेत पार किन पाइया । अरे हाँ अबधू-- पेड़ा परो न चीन्ह मूल जहँडाइया ॥ २१ ॥

फफफा–फल लागे बड दूर बीज बकला बिना ।
कौन खवावे तोर फेम अकला विना ॥
फिरते रहे भुलान फिकर दिलमें रही । अरे
हाँ अवधू--फिकर मिटे दिल माहिं फकीरी
तब सही ॥ २२ ॥

बब्बा--बिबि अक्षर ठहराय वृक्ष जो राखि हाँ ।
वेद शास्त्र बहु ग्रन्थ के अद्‌भुद भाखिहाँ ॥
बकत बकत विस्तार बहु विधि ले बढा ।
अरे हाँ अवधू–भीतर भरी भंगार कनक
ऊपर मढा ॥ २३ ॥

भभ्भा–भरमे सकल जहान कहे यहां कछु नहीं ।
आपहि फन्द बनाय भरम कीन्हों सही,
डार भरम की मोट भरमना करम है । अरे हाँ
अबधू–भीतर है भरपूर तो बाहर भरम
है ॥ २४ ॥

यय्या (जज्जा) जो तुम चतुर सुजान जगत गुरु जानले । जिन सिरजी सकल जहान ताहि पहिचानले ॥ एक ज्योति जगमाँहि जगा मग होय रही । अरे हाँ अबधू–उन थापी निनार तहाँ कछु है नहीं ॥ २५ ॥

ररा–राम राम सब जपे राम सो नामिले । आतम राम बिसार सून्नकूँ सब चले ॥ सून्न सनेही राम कहो किन पाइया । अरे हाँ अबधू––जुग जुग आतम राम कबीर गोहरा-इया ॥ २६ ॥

लल्ला–लाज बीज पत खोय भांड मूरख भये । लाधा विष निज मूल लालसो ना लिये ॥ लगी दवा चहुँ ओर लपटमें सब परे । अरे हाँ अबधू–कदहि न गयो मर्म सकल सरबस बरे ॥ २७ ॥

बव्वा--वाहि की परतीत वाहि विन और न कोई । वो सब के सिरताज काज वासे सहि होई ॥ वह नहि आवे जाय सबन सो भिन्न है । अरे हाँ अबधू-ऐसी अकल विवेक सबन मिलि कीन्ह है ॥ २८ ॥

सस्सा--संसय भयो अथाह सासत जिवको भई। इहां मिलने को नाहिं सिपत सबहिन कही॥ सिद्ध साधु संसार सबै सुमिरन करै । अरे हाँ अबधू--सुकृत पडे न चीह्न नहीं संसै टरै ॥ २९ ॥

षष्षा-षोजो खोजी होय षोज नाहीं मिलै । खोजी खोज सिरीन कहो तुम कहाँ चले ॥ जहाँ मिलनकी मौज खोज तहाँ ना किया । अरे हाँ अबघू-खायो मूल गँवार खसम दिल नादिया ॥ ३१ ॥

सस्सा--सत्य सुकृत सतनाम सबनमें सांच है ।
सत रूप जगमाहिं तो मनसा बाच है ॥
संशय टारन भयहरन सब कल निधि है
सही । अरे हाँ अवधू--जो पूछो सो कही अब
का कही ॥ ३२ ॥
हहा--हाजिर सो हजूर गाफिली दूर है ।
हिरदा कमल में हंस सजीवनमूर है ॥ हंसे
हंसावे आप सबन में सोइ है । अरे हाँ अवधू--
हितकर देख विचार वचन यह संच है॥३३॥
छछ्छा--छल जो गया सब छूट महा आनन्द भया।
मिटी जो जमकी त्रास छत्र सिरपर धरा ॥
छाप सतकी पडी काज पूरन भया । अरे
हाँ अवधू--कहे कबीर विचार--विछड
मिलना भया ॥ ३४ ॥
साखी--शीलवन्त सुजन जन, हिरदे प्रेम प्रकाश ।
सत्य टेक शब्दे गहे, सोजन सदा निवास॥

यह चौतीसा सुरत गोसाई सनेही नाम साहबके समय की लिखी प्रतिसे उतारकर दियाहै।

अथ दूसरा चौतीसा प्रारम्भः ।

कक्का–काया कुंज करमकी वारी, कर्ता बाग लगाया । किनका तामे अजर समाना, जिन बेली पलुहाया ॥ पांच पचीस फूल तहँ फूले, मन अलि तहां लुभाना, वा फूलनके लपट विषयरस, रमता राम भुलाना ॥

साखी–मनभवंरा यह कठिन है, विषय लहर लपटाय । ताहि संग रमता बहे, फिर फिर भटका खाय ॥ १ ॥

खख्खा–खलककी खबर नहीं, ख्वाब ख्यालमें भूला । खाना दाना जोडा घोडा, देख जवानी फूला ॥ खासा पलंग सेज बन तोशक तकिया फूलबिछाया । नवल नार ले तापर पौढे काम लहर उमड़ाया लागी

नारि पियारि जब,छुटा धनी सों नेह । काल
जबै ले ग्रासई, खाक होयगी देह ॥ २ ॥
गग्गा--गुरु कीजे निरख परख के, ज्ञान रहन
का पूरा । गर्भगुमान मदनमदत्यागो, दया
क्षमासतसूरा ॥ गैलबतावै अमर लोककी,
गावै सतगुरु बानी ॥ मन गज सिर
अंकुश दे बैठे, गुरू ग्यान मल तानी ॥
पाप--पुन्यकी आशा नाहीं, करम भरमसों-
न्यार । किरतम पाखंड परिहरे, अस गुरु
करौ बिचार ॥ ३ ॥
घग्घा--घट गुरु ज्ञान बिना अँधियारा, मोह
तिमिर तन छाया । सार असार बिचारे
नाहीं, अमी छोडि विष खाया ॥ घर का
घृत रेते में डारे, छाछ ढूंढता डोले । कञ्चन
देके काच बिसाहै, हरविगरानातौले ॥ ज्ञान
बिना नर अंध है, अंध कर्म मत हीन ।

सांच गहे नहिं परखिके, झूठे के आधीन ॥ ४ ॥

उवां–ऊन मत मानों संतो, गहो परमारथ बानी । उपजे सुख तबहृदे तुम्हारा, जबपरखो मम बानी ॥ ऊँच नीच कछु है नहीं, कर्म कहावे छोटा । जिस के करनी अन्दर नाहीं, सोई माल है खोटा॥ऊपर माला जटा जनेऊ, माथे तिलक सुहाय । संसैसोगघट-भीतर, अंदर मैल रहाय ॥ ५ ॥

चच्चा--चित चेतो चतुर चिकनियाँ, चैन कहा तुम सोया । चतुराई सबभार परैगी, जन्म अकारथ खोया ॥ चौथा पन तेरो आय लगा, अजहुँ चेत गुरु ज्ञानी । नहिं तो परिहो खोह अंधियारे, फिर पाछे पछतानी ॥ ऐसे पाटन आयके, सोदा करो

बनाय । जोचूको या जन्म से, तो दुख भुगतो जाय ॥ ६ ॥

छच्छा--छलबल छिनमें निकस जायगा, जब छेके जम आई । छट पट करे मरे बिष ज्वाला, तब कहु कौन सहाई ॥ जम के मुगदर सिरपर बजै,तब करिहो किल कारी। तात मात भ्राता सुतसज्जन, काम न आवै नारी ॥ छूटी सकल सगाई, भया चोर का हाल । संगी सब न्यारा रहे, आप परै मुख काल ॥ ७ ॥

जज्जा--जमके पाले जबै परै जिव,तब कछु बात न आवै।तहां कछु चालै नाहीं, सीस धुनी पछतावै॥जम ले पहुँचे चित्र गुपित पहँ, लिखनी लेख बिचारे। दयाहीन गुरु बेमुख ठाढे, अगिनकुण्ड में डारे ॥ जन्म सहस अज-

गर देवे, विषज्वाला अकुलाय । पीछे किमि विष्टा माँही, भूत खान परजाय ॥ ८ ॥

झझ्झा--झाखन झुखन छांडो, झमकि करो गुरु सेवा । झांई मन की दूर बहावो, परख शब्द गुरु देवा ॥ झगरा झूठ झाञ जग त्यागो, झपट भजो सत नामा । झीन करो मन मेरु मन्दिर में, गुरु पद पँकज बिश्रामा ॥ होइ अधीन गुरु चरन गहो, कपट भाव कर दूर । जों पतिव्रता पति गही तकै न दूसर कूर ॥ ९ ॥

ञञ्ञा--इश्क बिना मिले नहिं साहब, के तो भेख बनावे । इश्क मुश्क न छिपे छिपाये, के तो कोई छिपावे ॥ इत उत यहाँ उहां सब त्यागो, निहचे गहो गुरु शरना । याही से सुख है दुख नासै, मिटै जन्म औ मरना ॥ आदि नाम है जा हिय, सोई गुरु है

सार । कीतम को जो ध्यावई, सो भव लहै न पार ॥ १० ॥

टट्टा--टीम टाम बाहर बहुतेरा, दिल दासी से बंधा । संख धुन ले को आरती, छुटा न घरका धंधा ॥ टिकुली सेंदुर चरखा पूनी, दासी ने फुरमाया। कच्चे बच्चे ने मांग मिठाई, मगन भया तब लाया ॥ जिन सेवक पूजा दई, ताहि दई आसीस । जहाँ नहिं तहां टेढे भये, कहे भसम करो जगदीस ॥ १० ॥

ठट्ठा--ठग बहुतेरे भेष बनावे, गले लगावे फांसी। स्वांगबनाये कौन नफाहै, जो न भजे अविनासी ॥ ठोकर सहे गुरूके आगे, ठीक ठौर तब पावे । ठकठक मेटे जरा मरण का, जम के हाथ न आवे ॥ मृतक होय गुरुचरणगहे, ठसककरे सबदूर । कायर ते नहिं भक्ति होय, ठानि रहै कोइ सूर ॥ १२ ॥

डड्डा--डगमगसे कछुकाज न सरि है, अडिग नाम गुन गहिये। डर मेटे तब विषम काल को, अछै अमर पद लहिये ॥ डरते रहिये गुरू साधु से, डिंभ काम नहिं आवै । डिंभ डुबावै भवसागर में, डहनमरन दुख पावे ॥ डेढ़ दिना को जीवना, डारो कुबुध नसाय। डेरा पावो सत्तलोक में,सतगरु शब्द-समाय ॥ १३ ॥

ढड्ढा–ढूंढत फिरौ तुम कौन कूँ, ढूँढे सो ढिग-नेरे । ढोल मारके सबै चिताऊँ, सतगुरु शब्द निबेरे ॥ है तू कौन कहाँसे आया, कहवाँ निजघर तेरा । केहि कारन तुम भर मत डोलौ, तन तज कहाँ बसेरा ॥ को रक्षक है जीव का, गहो ताहि पहिंचान । रक्षक के चीन्हे बिना, अन्त होयगी हान ॥ १४ ॥

णण्णा--गुणातीत निर्गुण अबिनासी, दयानिधि सुखसागर। निहचल ठौर निरंतर बासा, नाम अनादि उजागर ॥ निर्मल अमी कांत छबि अदबुद अकह अजावन सोई ॥ नख शिख नाभि नैन मुख नासा, श्रवन चिकुर सम होई ॥ चिकुरनके उजियारमें, कोटिन बिधु सरमाय। कहा क्रांत छबिबरनो,बरणत बरनि न जाय ॥ १५ ॥

तत्ता--ताहिपुरुष के अंस जीव हैं, धर्मराय ठगि राखा। तारन तरन आप कहलावै, वेद शास्त्र अबिलाखा ॥ तत्त प्रकृति त्रिगुन तन बंधा, नीर पवन की बारी। धर्मराय यह रचना कीन्ही, तहां जीव बैठारी ॥ जीवहि लाग ठगौरी, भूला आपन देस । सुमिरन करही कालका,भुगते कष्टकलेस ॥ १६ ॥

थथ्था--थकित भया जिव, भरमत डोलै, चौ-
रासी के माहीं । नाना कष्ट जन्म त्रास जो
व्यापै, जरे मरे पछताहीं॥ थाह न पावै बिपत
कष्टको, बूडे संसै धारा । भौसागर के विषम
लहर हैं, सूझे वार न पारा ॥ बिकल परे
अघ जोयन में, बहुविधिकरे पुकार । सत-
गुरु शब्द चीन्हे बिना, कैसे उतरे पार॥ १७॥
ददा--दुंद वाद है बहुत देहमें परचे तहां न पावे।
नरतन धर सो साहब सुमिरे तो जम निकट
न आवे ॥ दरसकराऊँ सत्त पुरुष का, देह
हिरंमर पैहो । सुख सागर सुख बिलसो
हंसा, भोजल बहुर न ऐहो ॥ ऐसा सुख घर
छाड़के, आगे दुखका भार । भर्मवश जिव
भेद न जानै, लखै न शब्दहमार ॥ १८ ॥
धध्धा--धर्म धर्म कर सबै पुकारै, धर्महि चीन्ह
न पावै । धर्मराय तिहुँ लोकहि ग्रासै,

जीवति बाँध झुलावे ॥ धोखा दे सबको मारे, सुरनर मुनि नहिं बांचे। नर बपुरा की कौन चलाये, तन धरधर सब नाचे ॥ भक्ष-क कलादिखायके, पुनिधरि रक्षकभाय । र-क्षक जानजपै जिव, पुनि तेहि भक्षक-राय ॥ १९ ॥

नन्ना-'निरभै नाम लौ लावे, नकल चीन्ह पर त्यागो । नाद बिन्दते न्यारा कहिये, सुरत सोहंगम यागो ॥ निराधार निहतत्त निह-अक्षर, निह संसै निहकामी । निःस्वादी निर्मल अविगत, निहचिंत सुखधामी ॥ नामसनेही चेतोहो, भाषोघर को डोर । परखो गुरुगम सुरत से, चलो तृण जम तोर ॥ २० ॥

पप्पा--पाप पुन्य में जग अरु झाने, पार कौन बिधि पावे । पाप पुन्य भुगते नर घर घर

फिर फिर जम लेजावे।। प्रेम भक्ति परमातम-पूजा, परमारथ चित धारे ।। पावन जन्म परम पद पावो, पारख शब्द विचारो।। प्रीत-मबिरह वियोग जेहि, परिहारि कपट कुचाल। पिउपिउ रटन लगावो, पाँव परे तेहि काल ॥ २१ ॥

फफ्फा--फरामोसकर फिकर, फहमकरो दिल माहीं, परफूलित संतन गुनगावो, जमते-हिदेख डराहीं ।। फाजिल सो जो आपा मेटे, फना होय गुन गावै ।। फांसी काटे करम भरम की, जम के हाथ न आवै ।। फेरफेर नर भर्म बस भर्महि भटका खाय। तीरथ बरतलगी जिव भरमें, उस्सर प्यास न चाय ॥ २२ ॥

बब्बा--ब्रह्म बसत सर्व भूत में, दुतिया भाव न होई । बर्त्तमान चित चेतन नाहीं, भूत

भविष्य बिलोई ॥ बड़ेबड़े विषम बुद्धि लागे, बोलन हार न जोये । ब्रह्म दुखित कर पाहन पूजे, बरबस आप बिगोये ॥ बंधा परे नर काल के, बुद्धि ठगाई जान । बंध छुडा बाहर ले चलूं, मोहि गहो पहिचान॥ २३ ॥

भभ्भा--भार परे यह देश बिगाना, भवसागर औगाहा । भक्त अभक्त दोऊ कह बोरे, कोई न पावे थाहा ॥ भक्षक ने लीला बिस्तारी, कला अनेक, दिखावे। भक्षक को रक्षक कर थापै, रक्षक दीन्ह न पावे ॥ भक्षे जाहि को भक्षक, रक्षक रहे निनार । परम चक्र में परे जिव, लखे न शब्द हमार ॥

मम्मा- मन मैंगल मस्त दिवाना, जीवहि उभट चलावे । अक्रम कर्म करै मन आपै, पीछे जिव दुख पावे ॥ मोह बस्य जिव मन नहिं चीन्हे, जाने यह सुखदाई । मार लगे

जब मन होय न्यारा, नरक परे जिवजाई ॥ मन गज अगुवा काल को, परखो संत सुजान । अंकुस सतगुरु ज्ञानहै, मन मतंग भैमान ॥ २८ ॥

जज्जा--जो जिव सतगुरु शब्द समावे,तो जम होवे चेरा । जुगत जुगत कर मनको जीतो,सहजे होय निवेरा॥जहँ लग काल जाल विस्तारी, सो सब मनकी बाजी । मनहिं निरंजन राजा कहिये, मन पंडित मन काजी । गुरु प्रताप भये जोर जिव, निबल भया मन चोर । तस्कर लाग न पावई जो गढ़पति करै अंजोर ॥ २६ ॥

ररी--रहनी रहै रजनी नहिंचंपे, रमे सती गुरु बानी । रहनी बाती जीत उजियारे, जाते होय न हानी ॥ रमता राम काम कर अपना सपना सब संसारा । रार रोस तजि

सतगुरु सेवौ, जासे उतरो पारा ॥ रैन दिवस वाघर नहीं, पुरुष प्रकास अंजोर । ले राखूँ तेहि ठाँवजिव, जहाँ न झंपै चोर ॥ २७ ॥

लल्ला--लगन लगी जेहि गुरु चरणों, लक्ष प्रगट तेहि ऐसे । लगन लगी तब मगन भया मन, लोक लाज कुल कैसे ॥ लाग रहे गुरु मुर्त्त परेखे,निज स्वारथ नहीं सूझै।लागे ठोकर पीठ न देवे, सूरा सन्मुख जूझै।लागे लहर ललक मन बुद्धकी, निकट न आवेताहि । लोटे गुरु चरणन तरे, गुरु सनेह हिय जाहि ॥ २८ ॥

वव्वा--वाके निकट काल नहिं आवै, जो सत नाम समाना । वार पार को संसै नाहीं, बाहीसो मनमाना ॥ वासिल बाकी काल, बली की ताही हाथ बिकाना।वारिस कूँ सौंपा-दिल अपना, सबही द्वन्द्व समाना ॥ बाहीसों

जिव इश्क लगावे, वाजिब सखुन अजूब। वाबद एककरो बन्दगी, गहो पाक महबूब ॥२९॥

सस्सा--सहर चोर घन घोर करे निसि, सोवै सब घरवारी । सोर न करें भर्म बस सोवै, लागी विषम खुमारी ॥ साहब से फेरा दिल अपना, दुनियां बीच बँधाया । ससुरा साला साली सासू, समधी सुजन सुहाया ॥ सत गुरु शब्द पुकारई, समुझि गहै कोइ सूर सुमरि लीजो समरथको; जाना है बडदूर३०॥

षष्षा--षलक तजै खलक मन रोचै, नर खोये जात सब कामा । खबर नहीं घर खर्च खुटाना; चेतो रमता रामा ॥ खोल कपाट चितचेतो अजहूँ वाहिद से लौ लावो । ख्वाब ख्यालकर दूर दिवाना; हिरदे नामस-मावो ॥ खालभरी है वायु सों; खाली होत

न वार। खेम परे जेहिकाम में, सो करु वेगि। विचार ॥ ३१ ॥

सस्सा--सहज शील संतोष धीरधर, ज्ञान बिबेक बिचारो। दया छमा सत संगत सेवा, सत गुरु शब्द अधारो ॥ सुमरण कर सत्त नाम धनी को, सूरा तन गहि रहना। सुमरो आरि अँजोर परे तब, मनके संग न बहना॥ सैन कही समुझै कोई, रहनी रहै सो सार। कहे तरे तो जगतरे, कहनि रहनि बिन छार॥

हह्हा--हिया माहि सतनाम समाना, दया मिहर दिल जाना। हरिके मने बिन तरा न कोई, हरिसे लोक अयाना ॥ हरि बिनुसे हरि अजर अमर है,हरिमें हरिको बूझोहाजर छोड़ बुत्त को पूजै हद्द कर नाहीं बूझै॥हम हमार घर छाँड़िकै, हक्क राह पहिचान। हासिल होय मकसद तब, हाफिज अमल अमान ॥३३ ॥

छछ्छा–छैल चिकनिया भयाघनेरा, छाका फिरै दिवाना । छय होय जाय अमर नहिं कोई, आखिर कूँ पछिताना ॥ छर मध्ये निअ-च्छर बूझे,समझे गुरु गमधावे ।छरमें निःअ-च्छर जो जाने निःअच्छर तब पावे ॥३४॥

साखी–निच्छर गहै विवेक, कारि बावन ते भिन्न । कहैं कबीर धर्मदाससे, विरला कोइ जानै चिह्न ॥

इति ज्ञान चौंतीसा–कबीर साहबका सम्पूर्ण ॥

ज्ञानचौंतीसा ॥ २ ॥

ओ३म्–ओंकार आदि जो जाने । लखिकै मेटे ताहिसों माने ॥ ॐकार कहें सब कोई । जिह्न यह लखा सो बिरला होई ॥ कंका कँवल किर्णमो पावे। शशि बिगसित संपुट नहिं आवे॥

तहां कुसुम रंग जो पावै।औगह गहिके गगन रहा-
वे॥१॥खेखा चाहे खोरि मनावे ।खसमहि छाड़ि
छाडि दहूं दिश धावे ॥ खसमहि छाडि छिमा हो
रहिये । होय न खीन अक्षय पद लहिये ॥ २ ॥
गंगा गुरुके बचनहि मान। दूसर शब्द करो नहिं
कान ॥ तहां बिहंगम कबहुं न जाई । औगह
गहिके गगन रहाई॥ ३ ॥ घेघा घट बिनसे घट
होई। घटहीमें घट राखु समोई ॥ जो घट घटे
घटहि फिरि आवे। घटहीमाँ फिर घटहि समावे
॥ ४ ॥ ङङां निरखत निशदिन जाई। निरखत
नैन रहे रतनाई ॥ निमिषं एक जो निरखै पावे।
ताहि निमिषमें नैन छिपावे॥५॥चचाँ चित्र रचो
बड भारी। चित्र छोडि तैं चेतु चित्रकारी॥जिन्ह
यह चित्र विचित्र है खेला। चित्र छोडि तैं चेतु
चितेला ॥ ६ ॥ छँछा आहि छत्रपति पासा।
छकि किन रहहु मेटि सब आसा ॥ मैं तोहीं

छिन छिन समुझावा । खसम छाँडि कस आपु बंधावा॥७॥ जँजा ईतन जियत न जारो । जोबन जारि युक्ति तन पारो॥जो कछु युक्ति जानि तन जरे । ई घट ज्योति उजियारी करै ॥८॥ झँझा अरुझि सरुझि कित जान।अरुझनि हींडत जाय परान ॥ कोटि सुमेर ढूंढि फिरि आवे । जो गढ गढे गढैया सो पावै॥९॥ञञा निग्रहे से नेह करु निरुवार छांड़ संदेहू ॥ नहिं देखे नहिं भाजिया परम सयानप येहू ॥ जहां न देखि तहां आपु भजाऊ।जहां नहिं तहां तन मन लाऊ॥जहां नहिं तहां सब कछु जानी । जहां है तहां ले पहिचानी ॥१०॥टटा बिकट बाट मनमांही।खोलि कपाट महलमों जाँही॥ रही लटापटि जुटी तेहीमांही । होहि अटल तब कतहुं न जाही ॥ ११ ॥ ठंठा ठौर दूर ठग नियरे । नितके निठुर कीन्ह मन घेरे ॥ जे ठग ठगे सब लोग सयाना।

सो ठग चीन्हि ठौर पहिचाना ॥ १२ ॥ डडौं डर उपजे डर होई । डरहीमें डर राखु समोई ॥ जो डर डरे डरहि फिरि आवे । डरहीमें फिर डरहि समावे ॥ १३ ॥ ढंढा ढींडतही कित जान । ढींढत ढूंढत जाई प्रान ॥ कोटि सुमेर ढूंढि फिरि आवे । जेहि ढूंढा सो कतहुं न पावे ॥ १४ ॥ णणा दुई बसाये गांऊ । रेणा ढूंढे तेरी नाऊ ॥ मुये एक जाय तजि धना । मरे इत्यादिक केतेको गना ॥ १५ ॥ तंता अति त्रियो नहिं जाई । तन त्रिभुवनमें राखु छिपाई ॥ जो तन त्रिभुवनमांहि छिपावे । तत्त्वहि मिलि तत्त्वसो पावे ॥ १६ ॥ थथा अति अथाह थाहो नहिं जाई । ई थिर ऊ थिर नाहिं रहाई॥थोरे थोरे थिर होउ भाई । बिन थंभे जस मंदिर थंभाई १७

ददा देखहुं बिनसनहारा । जस देखहु तस करहु बिचारा ॥ देखहुं द्वारे तारी लावे । तब

दयालके दर्शन पावे ॥ १८ ॥ घघा अर्धमांहि अँधियारी । अर्ध छाडि ऊर्ध मन तारी ॥ अर्ध छोडि ऊर्ध मनलावे । आपा मेटिके प्रेम बढावे ॥ १९ ॥ चौथे वो नामहँ जाई । रामका गद्धा होय खर खाई ॥ २० ॥ पंपा पाप करें सब कोई । पापके करे धर्म नहिं होई ॥ पपा कहे सुनहु रे भाई । हमरेसे इन किछुवो न पाई ॥ २१ ॥ फफा फल लागे बड दूरी । चाखे सतगुरु देइ न तूरी ॥ फँफा कहे सुनहु रे भाई । स्वर्ग पतालकी खबरि न पाई ॥ २२ ॥ बबा बर बर करें सब कोई । बरबर करे काज नहिं होई ॥ बबा बात कहें अर्थाई । फलका मर्म न जानहु भाई ॥ २३ ॥ भँभा भभरि रहा भरपूरी । भभरेते है निभरे दूरी ॥ भभा कहे सुनहु रे भाई । भभरे आवे भभरे जाई॥ २४ ॥ मंमाके सेये मर्म नहिं पाई। हमरेसे इन मूल गमाई। माया मोह रहा जग पूरा । माया मोहहि लखहु

विसूरी॥२५॥यया जगत रहा भरपूरी।जगतहुंते
है जाना दूरी ॥ यया कहे सुनहुरे भाई।हमहीं ते
इन जै जै पाई ॥२६॥ ररा रारि रहा अरुझाई ।
रामके कहे दुख दारिद्र जाई ॥ ररा कहे सुनहु
रे भाई । सतगुरु पुँछिके सेवहु आई॥२७॥लॅला
तुतुरे बात जनाई । तुतुरे आय तुतुरे परचाई ॥
आप तुतुरे औरकी कहई । एके खेत दूनों निर्ब-
हई॥२८॥वंवा वह वह कहें सब कोई।वह वह कहे
काज नहिं होई॥वह तो कहे सुने जो कोई ।स्वर्ग
पताल न देखे जोई॥२९॥शंशा सर नहिं देखे
कोई।सर शीतलता एके होई॥शंशा कहे सुनहु रे
भाई । शून्य समान चला जग जाई॥३०॥ षषा
खरा करें सब कोई।खर खर करे काज नहिं होई॥
षषा कहे सुनहु रे भाई । राम नाम ले जाहु
पराई॥३१॥संसा सरा रचो बरियाई । सर बेधे
सब लोग तवाई॥ससाके घर सुन गुण होई ।
इतनी बात न जाने कोई ॥३२॥हंहा हाय हायमें

सब जग जाई।हर्ष सोग सब मांहि समाई।।हक-रिहकरि सब बड बड गयऊ । हहा मर्म न काहू पयऊ ॥ ३३ ॥ क्षंक्षा छिनमें परलय सब मिटि-जाई।छेव परे तब को समुझाई॥छेव परे काहु अंत न पाया।कहहिं कबीर अगमन गोहराया ॥३४॥

बिप्रमतीसी ।

बिप्रमतीसी १.

सुँनहु सबन मिलि बिप्रमतीसी। हरि बिनु बूडी नाव भरी सी ।। ब्राह्मण होयके ब्रह्म न जाने। घरमा यज्ञ प्रतिग्रह आने ॥ जेहि सिरजा तेहि ना पहिचाने। कर्म धर्म मति बैठि बखाने ॥ ग्रहन अमावस और दुईजा । शांति पांति प्रयोजन पूजा ॥ प्रेत कनक मुख अंतर बासा । आहुति सत्य होमकी आसा ॥ कुल उत्तम जगमांहि कहावे । फिर फिर मध्यम कर्म करावे॥ सुत दारा मिलि जूठो खाई । हरिभक्ताके छूति लगाई ॥ कर्म अशौच उछिष्टा खाई । मतिभ्रष्ट

यमलोक सिधाई ॥ नहाय खोरि उत्तम है आये। विष्णु भक्त देखत दुख पाये ॥ स्वारथ लागि रहे बेकाजा। नाम लेत पावक जिमि डाजा ॥ राम कृष्णकी छोडि न आसा। पढि गुनि भये कृतमके दासा ॥ कर्म पढें औ कर्मको धावें। जेहि पूछा तेहि कर्म दृढावें ॥ निःकर्मीकी निंदा कीजे। कर्म करें ताही चित दीजे॥ भक्ति भगवंतकी हृदया लावें। हिरणाकुशको पंथ चलावें ॥ देखहु सुमतिकेर परकासा। बिनु अभ्यंतर भये कृतमके दासा ॥ जाके पूजे पाप न ऊडे। नाम स्वैरणी भवमा बूडे ॥ पाप पुण्यके हाथहि पासा। मारि जगतका कीन्ह बिनासा ॥ ई बहनी कुल बहनि कहावें। ई गृह जारे ऊ गृह मारे॥ बैठे ते घर साहु कहावें। भीतर भेद मन्मुखहि लगावें ॥ ऐसी विधि सुर विप्र भनीजे। नाम लेत पीचासन दीजे ॥ बूडि गये नहिं आपु सँभारा। ऊंच नीच कहु काहि

जो हारा ॥ ऊंच नीच है मध्यकी बानी । एकै पवन एक है पानी ॥ एके मटिया एक कुम्हारा। एक सबनका सिरजनहारा ॥ एक चाक सब चित्र बनाई । नाद बिंदके मध्य समाई ॥ व्यापिक एक सकलकी ज्योती । नाम धरे का कहिये भौती ॥ राक्षस करनी देव कहावैं । बाद करें गोपाल न भावैं ॥ हंस देह तजि न्यारा होई । ताकर जाति कहे धौ कोई ॥ श्याह सफेद कि राता पियरा । अवरण बरण कि ताता सियरा । हिंदू तुरुक कि बूढोबा- रा ॥ नारि पुरुषका करहु विचारा ॥ कहिये काहि कहा नहिं माना । दास कबीर सोइ पै जाना ॥

साखी–बहा है बहि जातहोकर गहियेचहुं ओर॥
जो कहा नहिं माने तोदे धक्का दुइ और ॥१॥

कहरा ।

कहरा १.

सेहज ध्यान रहु सहज ध्यान रहुगुरुके वचन

समाई हो ॥ मेली सृष्टि चरा चित राखहु । रही हष्टि लौलाई हो ॥ जस दुख देखि रहहु यह औसर । अस सुख होइ है पाये हो ॥ जो छुटकार बेगि नहिं लागे । हृदय निवारहु कोऊ हो ॥ भुक्तिकी डोरी गाढि जनि खैंचहु । तब बझि हैं बडरोहू हो ॥ मनुवहि कहहु रहहु मन मारे । खिजुवा खीजि न बोले हो ॥ मानु मीत मितेवो न छोडे । कमऊ गांठि न खोले हो ॥ भोगउ भोग भुक्ति जनि भूलहु । योग युक्ति तन साधहु हो ॥ जो यह भांति करहु मतवलिया । ता मतके चित बांधहु हो ॥ नहिं तो ठाकुर है अति दारुण। करि है चाल कुचाली हो ॥ बांधि मारि डंड सब लेहीं।छूटहिं तब मतवाली हो॥जबहीं सावत आनि पहूंचे । पीठ सांठि भल टुटि हैं हो॥ठाढे लोग कुटुम सब देखे । कहे काहुके न छुटि हैं हो ॥ एक तो निहुरि पांव परि बिनवे।बिनति किये नहिं माने हो ॥ अनचीन्हे रहहु न कियेहु चिन्हारी ।

सो कैसे पहिचनबेउ हो ॥ लीन्ह बुलाय बात नहिं पूछी । केवट गर्भ तन बोले हो ॥ जाँकर गांठि समर कछु नाहीं । सो निर्धनिया है डोले हो ॥ जिन्ह सम युक्ति अगमनके राखिन । धरिन मच्छ भरि डेहरि हो ॥ जेकर हाथ पांव कछु नाहीं । धरन लाग तेहि सो हरि हो ॥ पेलना अछत पेलि चलु बौरे । तीर तीर का टोवहु हो ॥ उथले रहहु परहु जनि गहिरे । मति हाथहुकी खोवहु हो ॥ तरके घाम उपरके भुंभुरी । छाहँ कतहुँ नहिं पायहु हो ॥ ऐसेनि जानि पसीझेहु सीझेहु । कस न छतुरिया छायहु हो ॥ जो कछु खेड कियहु सो कीयेहू । बहुरि खेड कस होई हो ॥ सासु ननँद दोऊ देत उलाटन । रहहु लाज मुख गोई हो ॥ गुरु भौ ढील गोनी भई लचपच । कहा न मानेहु मोरा हो ॥ ताजी तुर्की कबहुँ न साधेहु । चढेहु काठके घोरा हो ॥ ताल झांझमल बाजत आवे ।

कहरा सब कोइ नाचे हो ॥ जेहि रंग दुलहा ब्याहन आये। दुलहिनि तेहिंरंग राचे हो ॥ नोका अछत खेवे नहिं जाने। कैसेक लगवेहु तीरा हो ॥ कहहिं कबीर रामरस माते। जोलहा दास कबीरा हो ॥ ३ ॥

कहरा २.

मतँ सुनु मानिक मत सुनु मानिक। हृदय बंद निवारहु हो ॥ अटपट कुम्हरा करे कुम्हरैया। चमरा गांव न बांचे हो ॥ नित उठि कोरिया पेट भरतु है। छिपिया आंगन नाचे हो ॥ नित उठि नौवा नाव चढतु है। बेरहि बेरा बोरेहो ॥ राउरकी कछु खबरि न जानहु। कैसेकै झगरा निबेरहु हो। एक गांव में पांच तरुनि बसै। जेहिमाजेठ जेठानी हो॥ आपन आपन झगरा प्रकासिनि। पियासों प्रीति नसाइनि हो ॥ भैंसिनंमांहिं रहत नित बकुला। तिकुला ताकि न लीन्हा हो ॥ गाइन मांहिं बसेउ नहिं कबहूँ। कैसे पद पहिचनबेउ

हो ॥ पंथी पंथ बूझ नहिं लीन्हा । मूढहिं मूढ गंवारा हो॥ घाट छोडि कस औंघट रेंगहु।केसेकें लगबेहु तीरा हो ॥ जैतइनके धन हेरिन ललचिन । कोदइतके मन दौरा हो॥दुइ चकरी जनि दरर पसारहु । तब पैहो ठीक ठौरा हो ॥ प्रेम बाण एक सतगुरु दीन्हो । गाढों तीर कमाना। हो ॥ दास कबीर कीन्ह यह कहरा। महरामांहि समाना। हो ॥ २ ॥

कहरा ३.

रांमनामको सेवहु बीरा । दूरि नाहिं दुरि आसा हो ॥ और देव का सेवहु बौरे । ई सब झूठी आसा हो ॥ ऊपर ऊपर कहा भो बौरे । भीतर अजहूं कारो हो ॥ तनके वृद्ध कहा भौ बौरे । मनुवा अजहूं बारो हो ॥ मुखते दांत गये कहा बौरे । भीतर दांत लोहेके हो ॥ फिर फिर चना चबाब विषयके।काम कोध मद लोभेके हो ॥ तनकी सकल वासना घटि गयऊ ।

मनहि दिलासा दूना हो ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो । सकल सयाना पहुना हो ॥ ३ ॥

कहरा ४.

ओढ़न मोर राम नाम मैं रामहिका बनजारा हो ॥ राम नामका करहु बनिजिया । हरि मोरा हटवाई हो ॥ सहस नामका करों पसारा । दिन दिन होत सवाई हो ॥ जाके देव वेद पछ राखा । ताके होत हटवाई हो ॥ कानि तराजू सेर तीलि पउवा । तुर्किनि ढोल बजाई हो ॥ सेर पसेरी पूरा केले । पासंग कतहुँ न जाई हो ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो । जोर चला जहंडाई हो ॥ ४ ॥

कहरा ५.

रांम नाम भजु राम नाम भजु । चेति देखु मनमांहीं हो । लच्छ करोरि जोरि धन गाडें । चलत डोलावत बांही हो ॥ दादा बाबा और प्रपाजा । जिन्के यह भुईं भाँडे हो ॥ आँधर भये हियहु की फूटी । तिन्ह काहे सब छाडे हो ॥ ई संसार

असारको धंधा । अन्तकाल कोइ नाहीं हो ॥ उपजत बिनसत बार न लागे । ज्यों बारदकी छांही हो ॥ नात गोत कुल कुटुंम सब । इन्हकर कौन बड़ाई हो ॥ कहहि कबीर एक राम भजे बिनु । बूडी सब चतुराई हो ॥ ५ ॥

कहरा ६.

रॉम नाम बिनु राम नाम बिनु । मिथ्या जन्म गमायो हो ॥ सेमर सेइ सुवा ज्यों जहँडे । ऊन परे पछिताई हो ॥ जैसे मदपी गांठी अर्थ दे । घरहुकी अकिल गमाई हो ॥ स्वादे वोद्र भरे धौं कैसे । ओसे प्यास न जाई हो ॥ दर्वहीन जैसे पुरुषारथ । मनहीमांहि तबाई हो ॥ गांठि रतन मर्म नहिं जाने । पारख लीन्हा छोरी हो ॥ कहहिं कबीर यह औसर बीते । रतन न मिले बहोरी हो ॥

कहरा ७.

रहहुं संभारे राम विचारे । कहता हौं जे पुकारे हो ॥ मूंड मुंडाय फूलिके बैठे । मुद्रा पहिर

मंनूसा हो ॥ तेहि ऊपर कछु छार लपेटे। भितर भितर घर मूसा हो॥गांव बसतु है गर्भ भारती। बाम काम हंकारा हो॥ मोहन जहां तहां ले जइहैं। नहिं पत रहल तुम्हारा हो॥ मांझ मंझरिया बसे सो जाने।जन होइ है सो थोरा हो॥निर्भय भये तहां गुरूकी नगरिया। सुख सोवें दास कबीरा हो॥

कहरा ८.

क्षेम कुसल औ सही सलामत। कहहु कोनको दीन्हा हो॥ आवत जात दोऊ विधि लूटे।सर्व तंग हरि लीन्हा हो॥ सुर नर मुनि जति पीर औलिया। मीरा पैदा कीन्हा हो॥कहां लों गनो अनंत कोटि लों। सकल पयाना कीन्हा हो॥ पानी पवन अकाश जायँगे। चंद्र जायँगे सूरा हो॥ येभि जायँगे वोभि जायँगे।परत न काहुके पूरा हो॥ कुशल कहत कहत जग बिनसे।कुशल कालकी फांसी हो॥ कहैं कबीर सारि दुनिया बिनसे। रहै राम अविनासी हो॥ ८॥

कहरा ९.

ऐसैंनि देह निरालप बौरे । मुवले छुवे नाहिं कोई हो ॥ इंडवाकी डारिया तोरिया तोरि लराइनि । जो कोटिन धन होई हो ॥ ऊर्ध निस्वासा उपजि तरासा । कहराइनि परिवारा हो ॥ जो कोई आवे बेगि चलावे । पल एक रहन न पाई हो ॥ चंदन चीर चतुर सब लेपैं । गरे गजमुक्ताके हारा हो ॥ चौसठ गीध मुये तन लूटैं । जंबुकन बोद्र बिदारा हो ॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो । ज्ञानहीन मतिहीना हो ॥ इक इक दिना याहि गति सबकी । कहा राव कहा दीना हो ॥ ९ ॥

कहरा १०.

हौं सबहिनमें हौंना हो । मोहि बिलग बिलग बिलगाइल हो ॥ ओढ़न मोरा एक पिछोरा । लोगबोलैं एकताईहो ॥ एक निरंतर अंतर नाहीं । ज्यों शशि घट जल झांई हो ॥ एकसमान कोई समुझतनाहीं । जाते जरा मरण भ्रम जाई हो ॥ रैन दिवस ये तहंवाँ

नाहीं । नारि पुरुष समताई हो ॥ हौं मैं बालक बूढो नाहीं।ना मोरे चिलकाई हो ॥ त्रिविधि रहों संभनिमा बरतों । नाम मोर रमुराई हो ॥ पठये न जाऊँ आने नहिं आवों । सहज रहों दुनियाई हो ॥ जोलहा तान बान नहिं जाने। फाटि बिने दश ठाई हो ॥ गुरु परताप जिन्हें जस भाख्यो । जन बिरले सों पाई हो ॥ अनंत कोटि मन हीरा बेधा । फिटको मोल न पाई हो ॥ सुर नर मुनि जाके खोज परे हैं । कछु कछु कबीरन पाई हो ॥ १० ॥

कहरा ११.

नैनदीगेतैं विषम सोहागिनि । तैंनींद ले संसारागे ॥ आवत देखि मैं एक संग सूती । तैं औ खसम हमारा गे ॥ मोरे बापके दुइ मेहररुवा । मैं अरु मोर जेठानी गे ॥ जब हम रहलि रसिकके जगमें । तबहिं बात जग जानी गे ॥ माइ मोरि मुवलि पिताके संगे । सरा सचि मुवल सं-

घाती गे ॥ आपुहि मुवलि औरले मुवली । लोग कुटम संग साथी गे ॥ ज्यों लो स्वांस रहे घट भीतर । तौलो कुशल परीहै गे । कहहिं कबीर जब स्वास निकारि गो। मंदिर अनल जरीहै गे॥ ११॥

कहरा १२.

ई माँया रघुनाथकी बौरी । खेलन चली अहेरा हो ॥ चतुर चिकनिया चुनि चुनि मारे । कोइ न राखेउ न्यारा हो ॥ मौनी बीर दिगंबर मारे । ध्यान धरंते योगी हो ॥ जंगलमेंके जंगम मारे । माया किनहुं भोगी हो ॥ वेद पढंते वेदुवा मारे। पूजा करंते स्वामी हो ॥ अर्थ विचारत पंडित मारे । बांधेउ सकल लगामी हो । सिंगीऋषि वन भीतर मारे । शिर ब्रह्माका फोरी हो ॥ नाथ मछंदर चले पीछिदे । सिंघलहूमें बोरी हो ॥ साकटके घर कर्ता धरता। हरिभक्ताते चेरी हो॥ कहहिं कबीर सुनो हो संतो। ज्यों आवे त्यों फेरी हो॥

इति कहरा सम्पूर्णमिदम् ।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS